॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री जगदीश जी की आरती

पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी (19वीं सदी)

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे॥

जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का, स्वामी दुःख बिनसे मन का।
सुख संपति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे... ॥

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी, स्वामी शरण गहूँ मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे... ॥

तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतर्यामी, स्वामी तुम अंतर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे... ॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता, स्वामी तुम पालनकर्ता।
मैं मूरख फलकामी, मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे... ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति, स्वामी सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे... ॥

दीनबंधु दुखहर्ता, ठाकुर तुम मेरे, स्वामी रक्षक तुम मेरे।
अपने हाथ उठाओ, अपने शरण लगाओ, द्वार पड़ा तेरे॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे... ॥

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे... ॥

॥ बोलो भगवान विष्णु (जगदीश) की जय ॥